कालीबंगा : प्राचीन नगरीय नियोजन की भारतीय परंपरा का प्रमाण

<u>प्रस्तावना :-</u> भारत के इतिहास की जड़ें बहुत ही प्राचीन और उन्नत रही हैं । यहाँ सभ्यताएं केवल प्रगतिशील ही नहीं बल्कि दृढ़ संस्कृतियाँ रही हैं । वरन नगर – निर्माण और सार्वजनिक संरचना में भी बेमिसाल नमूना पेश करती है । विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं मेंसिंधु – सरस्वती सभ्यता का संबंध केवल ईंटों ओर नगरों व व्यापारिक गतिविधियों तक संकुचित नहीं थी इसमें सुव्यवस्थित ही नहीं बल्कि उन्नत जीवन पद्धति, खेती – बाड़ी, और धार्मिक परंपराओं का भी स्पष्ट संग लता दिखाई देती है ।

इसी सभ्यता के अंतर्भूत राजस्थान के हनुमान गढ़ जिले में स्थित कालीबंगा का नगर असाधारण रूप से महत्व रखता है । कालीबंगा की खोज 1953 में अम्लानद घोष द्वारा की गई, ओर बाद में 1961 से 1969 तक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के अंतर्भूत बी. बी. लाल के निर्देशन में गहन खुदाई का कार्य किया गया । उत्खनन से प्राप्त स्मृति चिन्ह न केवल कालीबंगा बल्कि हड़प्पा संस्कृति का प्रमुख केंद्र रहा है । भारतीय इतिहास में इसे नगर नियोजन ओर नगरीय संस्कृति का प्रमाणिक उद्धरण भी बना दिया । सबसे बड़ी खासियत कालीबंगा की इसका संगठित नगर नियोजन है नगर दो भागों में विखंडित किया गया था एक भाग गढ़ ओर निचले भाग को निचले नगर में विभक्ति किया गया था । जो प्रशासनिक ओर सामाजिक व्यवस्था का घोतक है । ग्रिड प्रणाली पर सड़कें विस्तृत थी, जल निकासी की व्यवस्था ढकी हुई ओर सुव्यवस्थित ढंग से थी, तथा योजनाबद्ध ढंग से भवन निर्माण किया गया था । इतना ही नहीं यहाँ से प्राप्त कृषि संबंधी प्रमाण जैसे हल चलाने की रेखाएं, यह दिखाती है की योजनाबद्ध ढंग से कृषि की जाती थी ।

यज्ञ–वैद्यों के अवशेष भी कालीबंगा से प्राप्त हुए हैं जो यह प्रस्तुत करते हैं कि धार्मिक गतिविधियां भी नगर नियोजन का अभिन अंग थी । इसका सारांश यह सिद्ध करता है कि धार्मिक गतिविधियां भी नगर नियोजन का अभिन्न अंग थी कालीबंगा केवल एक भौतिक नगर नहीं था, यह भारतीय परंपरा व नगरीय जीवन को सामाजिक, धार्मिक ओर आर्थिक नजरिये से एकता प्रदान करती है ।

कालीबंगा का ऐतिहासिक प्रीपेक्ष्य :- कालीबंगा राजस्थान के हनुमान गढ़ जिले में घघर नदी (प्राचीन सरस्वती–हँकड़ा) के किनारे स्थित एक प्रमुख स्थल है । इसकी पहचान सबसे पहले 1953 में अम्ल नन्द घोष ने की, ओर बाद में 1961–1969 के बीच भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अंतर्गत बी. बी. लाल व बी. के. ठाकुर के नेतृत्व में यहाँ व्यवस्थित खुदाई की गई । कालीबंगा में उत्खनन से यह सिद्ध हुआ कि पूर्व हड़प्पा लगभग (2900 ईसा पूर्व) से हड़प्पा (2600–2000 ईसा पूर्व) ओर उतर – हड़प्पा (2000–1800 ईसा पूर्व) में अवशेष तीनों काल खण्डों के मोजूद हैं । इस नगर में ईंटों के मकान, जल निकासी प्रणाली ओर यज्ञ–वैद्यों के साथ साथ नगर नियोजन भी प्रस्तुत किया गया । ओर यहाँ हल चलाने के प्रारंभिक पुरातात्विक प्रमाण मिले हैं । जो यह सिद्ध करते हैं कि कृषि योजना बद्ध तरीकों से कि जाती थी । यह नगर केवल सिंधु – सरस्वती सभ्यता का केंद्र था भारतीय उपमहाद्वीप में नगरीय संस्कृति, धार्मिक परंपरा ओर कृषि का प्रमाण प्रस्तुत करता है ।

UNDER PEER REVIEW IN IJAR

पूर्व–हड़प्पा काल :- पूर्व – हड़प्पा काल को सरस्वती – सिंधु सभ्यता का प्रथम चरण समझा जाता है, इस सभ्यता का कालक्रम लगभग 3300 ईसा पूर्व से 2600 ईसा पूर्व तक स्पष्ट किया गया है । इस समयावधि में ग्राम्य जीवन से शहरी जीवन की ओर संक्रमण दिखाई देता है । विभिन्न पुरातात्विक स्थलों जैसे मेहर गढ़, कालीबंगा, अमरी, कोटदीजी, इत्यादि से प्रमाण प्राप्त हुए हैं इस समय नगर में सामाजिक संस्कृति की नींव रखी जा जा चुकी हैं ।

3. नगर नियोजन का विस्तार :- सरस्वती – सिंधु सभ्यता का विस्तार एक योजनाबद्ध ओर संगठित नगर नियोजन तरीके से था । कालीबंगा, मोहनजोदड़ों ओर हड़प्पा से प्राप्त प्रमाण यह सिद्ध करते हैं की प्राचीन भारत में शहरी जीवन केवल संयोगवशनहीं था बल्कि इसे योजनाबद्ध रूप से तैयार किया गया था ।

(क) नगर का विभाजन :- नगर नियोजन में कालीबंगा के नगरों का विशिष्ट महत्व था । यह नगर का ऊंचा भाग था, जिसे मिट्टी ओर ईंटों की दीवारों से सुरक्षित किया गया था, गढ़ को प्रशासनिक, धार्मिक, ओर सामाजिक गतिविधियों का केंद्र माना जाता है । इसका क्षेत्र निचले नगर की तुलना में छोटा था, परंतु अधिक संगठित ओर योजनाबद्ध था ।

(ख) निचला नगर :- नगर नियोजन में कालीबंगा का निचले नगर का भू – भाग सबसे बड़ा था । सामान्य लोग जहां रहते थे यह वह क्षेत्र था, यह क्षेत्र गढ़ की तुलना में बड़ा भू – भाग था । इसकी संरचना से पता चलता है की नगरीय जीवन अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं था । इसमें सामान्य जन जीवन संगठित ओर सुव्यवस्थित ढंग से रहते थे ।

(ग) सरस्वती – सिंधु सभ्यता की सबसे बड़ी उन्नत उपलब्धि इस नियोजन का ग्रिड प्रणाली में बनी सड़कें हैं । सड़कें इस प्रकार से बनाई गई है कि जो एक दूसरे को समकोण पर कांटे परंतु पूरा नगर वर्गाकार या आयताकार खंडों में बाँटा गया था । सड़कें मुख्यतः उतर – दक्षिण व पूर्व – पश्चिम दिशा में बनाई गई थी । मुख्य मार्ग जो की चोड़ी सड़कें थी जो एक बड़े नगर के भूभाग को जोड़ती थी, संकरी गलियाँ इन मुख्य मार्गों को आपस में काटती थी । जो घरों ओर मोहल्लों तक पहुँचने का मार्ग थी । पूरा नगर जल की तरह दिखाई देता था, सड़कें 90 डिग्री पर मिलती थी, जिससे आवागमन सुगम होता था, पूरा नगर संतुलित ओर योजनाबद्ध लगता था जिसका कारण था सड़कों के बीच दूरी ओर दिशा नियत थी । खुदाई में पाया गया की सड़कें लगभग 1.5 से 3 मिटर मुख्य सड़कें थी ओर जबकि छोटी गलियाँ 1 मिटर से भी कम चोड़ी थी ।

(घ) भवन निर्माण एवं जल निकासी व्यवस्था :- भवन मुख्यतः : कच्ची एवं पक्की ईंटों से बनाए गए थे अधिकतर मकान वर्गाकार व आयताकार योजनाबद्ध तरीके से बनाए गए थे । हर घर में एक आँगन होता था जिसके चारों तरफ कमरे बने रहते थे । अत्यधिक भवनों में निजी कुएं ओर स्नानागार पाए गए हैं । जो की उतकर्षित वस्तु कलाएँ का संकेत देते हैं

(ङ) जल निकासी व्यवस्था :- घरों के गंदे पानी की निकासी के लिये सभी घरों में छोटी – छोटी नालियाँ बनी हुई है, जो की छोटी – छोटी नालियाँ, वो मुख्य सड़कों के किनारे बड़ी – बड़ी नालियों से जुड़ी हुई थी । नालियाँ ढलानयुक्त ओर

UNDER PEER REVIEW IN IJAR

ढकी हुई थी । जिससे पानी बहकर नगर से बाहर चला जाता था । यह प्रणाली आधुनिक सिवरेज सिस्टम जैसा ही है ।

4. भारतीय परंपरा के संदर्भ में कालीबंगा :- भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीन परपराएं यह सिद्ध करती है कि धार्मिक, सांस्कृतिक, वस्तु एवं कृषि – की गहरी जड़ें प्रस्तुत करती हैं की यह एक विकसित सभ्यता थी ।

क) धार्मिक परंपरा :- खुदाई के दोरान कालीबंगा में अग्री – वैदियाँ प्राप्त हुई है । जो यह प्रस्तुत करती है की वैदिक परंपरा में वर्णित यज्ञों की प्रारंभिक झलक प्रस्तुत करती हैं । छोटे – छोटे पूजा स्थल ओर वैदियाँ यह दर्शाते हैं की लोगों का जीवन धार्मिक था , यह परंपरा आगे चलकर हिन्दू धार्मिक ओर वैदिक संस्कृति के अनुष्ठानों में समाहित हुई ।

ख) योजनाबद्ध कृषि व्यवस्था :- कालीबंगा में जुताई से स्पष्ट होता है की उनके पास हल संबंधित उन्नत प्रमाण प्राप्त हुए हैं । भारतीय कृषि की प्राचीनता ओर निरन्तरता का प्रमाण है की कालीबंगा के किसान दोहरी फसल प्रणाली को अपनाएं हुए थे (खरीफ व रबी) की , भारतीय ग्रामीण जीवन का जो की आज भी आधार है ।

ग) सामाजिक – सांस्कृतिक जीवन की झलक :- लोग बस्तियों ओर मोहल्लों में रहते थे जिससे सामूहिकता ओर सहयोग की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी । अग्री वैद्यों ओए घरेलू पूजा स्थलों से यह पता चलता है कि यज्ञ ओर उपासना की प्रथा थी । मृदभांड (मिट्टी के बर्तन), मनकें आभूषण ओर खिलौने सौन्दर्य एवं कला – प्रेम को दर्शाते हैं । आभूषणों ओर मनकों के प्रयोग से समाज में सौन्दर्य एवं आभूषणों की परंपरा का संकेत प्राप्त होता है मिट्टी के बर्तनों से समाज की कारीगरी व आर्थिक संगठन ओर व्यापारिक संपर्क का पता चलता है । भारतीय सांस्कृतिक में आज भी घरेलू पूजा, आँगन – केंद्रित मकान और सामुदायिक जीवन प्रस्तुत करती है ।

5. विश्लेषण :- कालीबंगा की खुदाई से यह स्पष्ट होता है कि यह नगर केवल एक साधारण बस्ती नहीं थी यह एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से निर्मित योजनाबद्ध संगठित नगरीय केंद्र था । गढ़ और निचले नगर का विभाजन सामाजिक संरचना व प्रशासनिक बटवारे को प्रकट करता है । ग्रिड प्रणाली में बनी हुई सड़कें व्यवस्थित व ज्यामितीय ज्ञान को प्रस्तुत करता है आँगन – केंद्रित भवन व दो मंजिला इमारतें उन्नत वास्तुकला को प्रस्तुत करती है ढकी हुई नालियाँ स्वास्थ्य की स्वच्छता के प्रति सजगता दिखाती है । अग्री–वैदियां व पूजा स्थल यह बताते हैं कि सामाजिक संरचना धार्मिक जीवन का हिसा थी । जो भारतीय कृषि परंपरा की प्राचीनता को निरन्तरता सिद्ध करती है कि उस समय हल से जुताई कर के दोहरी फसल ऊगाई जाती थी । कुछ आभूषण, मृदभांड, खिलौने, व उन्नत वास्तुकला यह बताती है कि समाज जो कि केवल भौतिक सुविधाओं तक सीमित नहीं था वह सांस्कृतिक रूप से समृद्ध भी था ।

क) निष्कर्ष :- निरन्तरता और गहराई का प्रमाण भारतीय परंपरा के अनुसार कालीबंगा ने प्रस्तुत किया गया है । यहाँ का धार्मिक अनुष्ठान, नगर नियोजन, सामाजिक – सांस्कृतिक व कृषि पद्धति यह दर्शाते है कि भारतीय सभ्यता प्रारंभ से ही संगठित, वैज्ञानिक और मानवीय मूल्यों पर आधारित रही है

संदर्भ सूची :-

UNDER PEER REVIEW IN IJAR

(1) शिरीष कुमार शुक्ला – हड़प्पा सभ्यता और भारत की प्राचीन सांस्कृतिक (दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2008) पृष्ठ 112-125 |

2). पो. आर. एस. शर्मा – भारत का प्राचीन इतिहास (दिल्ली राजकमल प्रकाशन, 2010) पृष्ठ 67-73 |

3). अम्लानद घोष-भारतीय पुरातत्व का संक्षिप्त इतिहास(वाराणसी: ग्यानमंडल लीमटेड,2005)पृष्ठ 89-94 |

4). डी. एन. झा- प्राचीन भारत का इतिहास (दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस 2006) पृष्ठ58-65|

5). सुनीति कुमार चटर्जी – भारत की सभ्यताएं (कोलकाता: आनंद प्रकाशन, 2004)पृष्ठ102-110 |

6. Mortimer wheeler-the Induscivilization (Cambridge university press,1968), pp.78-85.

7). B.B. Lal – the Saraswati flows on: the continuity of Indian culture (New Delhi: Aryan books international, 2002), pp.135-142.

8). Gregory L. Possehl- the Indus civilization: A contemn porary perspective (New Delhi: Vistar Publications, 2002), pp.146-155.

9) Sturat Piggott – prehistoric India (Harmondsworth: Penguin Books, 1950) pp.95-101.

10). Jonathan Mark Kenoyer – Ancient cities of the Indus valley civilization (Karachi: oxford university press 1998), pp.120-128.

UNDER PEER REVIEW IN IJAR